अध्याय–7

प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग की समस्याएँ

अध्याय–7

प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्ग की समस्याएँ

प्रेमचन्द निम्नवर्ग और उभरते मध्यवर्ग के लेखक थे उन्होंने अपने साहित्य में जितना चित्रण मध्यवर्ग और निम्नवर्ग का किया उतना चित्रण उच्चवर्ग का नहीं किया। यद्यपि उच्चवर्ग का चित्रण भी उनके साहित्य में अछूता नहीं रहा। प्रेमचन्द का ताल्लुक स्वयं एक मध्यवर्गीय परिवार से था वे मध्यवर्ग के व्यक्ति थे। चूँकि उनका परिवार मध्यवर्ग से जुड़ा हुआ था इसलिए उनकी मध्यवर्ग से निकटता होना स्वाभाविक थी। जिस प्रकार प्रेमचन्द ने निम्नवर्ग का चित्रण अपने साहित्य में तद्युगीन अनुभवों के आधार पर किया उसी प्रकार मध्यवर्ग को व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर चित्रित किया है–"जब मैं इलाहाबाद गया तो मुझे दस रूपए मिलते थे, दस रूपए में, मैं सात रूपए घर भेजता था। पाँच रूपए का ट्यूशन करके आठ रूपए में अपना गुज़र करता था। सुबह उठकर हाथ–मुँह धोकर रोटी पकाता, रोटियाँ सेंक कर स्कूल जाता।"[1] अतः प्रेमचन्द मध्यवर्गीय जीवन को व्यक्तिगत रूप से स्पष्ट करते हुए नज़र आते हैं।

प्रेमचन्द के समय मध्यवर्ग की स्थिति के सम्बन्ध में डॉ0 इन्द्रनाथ मदान लिखते हैं कि–"मध्यवर्ग जीवन के प्रधान और नवीन आदर्शों के संघर्ष के बीच से गुज़र रहा था। प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कृतियों का सम्बन्ध विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज के इसी संघर्ष से है।"[2] प्रेमचन्द ने अपनी कृतियों में मध्यवर्गीय समाज के संघर्षों और आदर्शों का चित्रण किया है। उनकी सहानुभूति सदैव इस वर्ग के साथ रही है। उनके उपन्यासों में चित्रित प्रमुख मध्यवर्गीय पात्र नैतिकता को साथ लेकर आगे बढ़े। चूँकि, प्रेमचन्द की आस्था अनीति पर नीति की विजय पर थी इसलिए

उन्होंने कहीं भी अनीति की विजय नहीं दिखायी। सदैव सत्य की जीत दिखाना उनका जीवन दर्शन था। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय समाज में आगे बढ़ने वाले मध्यवर्ग के नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित किया।

डॉ0 मदान लिखते हैं कि–"प्रेमचन्द हिन्दी के ऐसे श्रेष्ठतम उपन्यासकार हैं जिनके ग्रन्थों में दमन और उत्पीड़न के युग के समाज की आस्था का यथार्थ चित्रण और प्रतिबिम्ब मिलता है। उन्होंने उन समस्याओं और मान्यताओं का स्पष्ट चित्र अंकित किया है जो मध्यवर्ग, ज़मींदार, पूँजीपति, किसान, मज़दूर, अछूत और समाज से बहिष्कृत व्यक्तियों के जीवन को संचालित करती है।"[3] अतः इन समस्याओं के प्रति उनकी दृष्टि एक प्रगतिशील लेखक की थी उन्होंने उन समस्याओं को महसूस किया जो उस समय का समाज झेल रहा था।

प्रेमचन्द के उपन्यासों में मध्यवर्ग की समस्याओं को दृष्टि में रखकर डॉ0 मंजुलता सिंह लिखती हैं कि–"प्रेमचन्द का युग राष्ट्रीय जागरण के विकास और प्रसार का युग कहा जा सकता है। इस युग के अधिकांश सामाजिक एवं राजनीतिक आन्दोलनों का प्रवर्तन मध्यवर्ग के द्वारा हुआ। मध्यवर्ग की समस्त चेतना तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वासों के उन्मूलन में सक्रिय रही हैं।"[4] अतः प्रेमचन्द का युग राष्ट्रीय जागरण के प्रसार के साथ सामाजिक व राजनीतिक आन्दोलनों का युग भी था जिसमें सक्रिय भूमिका मध्यवर्ग की रही।

मंजुलता सिंह का विचार है कि–"प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में जिस युग (1905–1936) की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक प्रवृत्तियों का चित्रण किया है वे प्रमुख रूप से मध्यवर्ग की प्रवृत्तियाँ हैं। मध्यवर्ग के बदलते हुए आदर्श और नवीन मान्यताओं का प्रेमचन्द के उपन्यासों में विशदता से वर्णन हुआ है।"[5]

अतः प्रेमचन्द ने अपने युग के मध्यवर्गीय समाज की प्रत्येक स्थिति व विचारधाराओं का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

प्रेमचन्द और मध्यवर्ग से सम्बन्धित विषय पर डॉ0 मदान लिखते हैं कि– "प्रेमचन्द यदि महान् है तो इसलिए कि उन्होंने किसानों के मानसिक गठन और मध्यवर्ग के दृष्टिकोण को उस समय गम्भीर विश्वास और उत्साह के साथ वाणी दी, जिस समय देश के सामाजिक और राजनैतिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे थे।"[6] अतः प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग व कृषक वर्ग की मानसिकता को समझा और उसे अभिव्यक्त किया जिस समय पूरा देश राजनीतिक व सामाजिक क्रान्तिकारी आन्दोलनों के बीच से गुज़र रहा था।

डॉ0 मंजुलता सिंह का विचार है कि–"एक ओर तो मध्यवर्ग प्रगतिशील शक्ति के रूप में राष्ट्र और समाज की पुर्नरचना में व्यस्त दिखाया गया है, दूसरी ओर यह घूस लेता है, ग़बन करता है, भाईयों का गला काटता है, लम्बी–चौड़ी डींगें हांकता है, मुख़बिरी और दलाली करता है। इस प्रकार प्रेमचन्द न मध्यवर्ग के दोनों ही रूपों को उजागर करके सामने रखा है।"[7] अतः मध्यवर्ग के दोनों रूपों की दृष्टि से प्रेमचन्द के 'प्रतिज्ञा' से लेकर 'गोदान' तक सभी उपन्यास महत्त्वपूर्ण हैं।

अतः प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में जहाँ एक और मध्यवर्ग की आदर्शात्मक झाँकी प्रस्तुत की है वहीं दूसरी ओर इस वर्ग के अन्तर्विरोधों को भी अभिव्यक्त किया है। उन्होंने मध्यवर्ग के इन दोनों रूपों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मध्यवर्ग से सम्बन्धित प्रेमचन्द के 'प्रतिज्ञा', 'वरदान', 'सेवासदन', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'ग़बन', 'कर्मभूमि', 'गोदान', एवं 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) उपन्यास महत्त्वपूर्ण है, जिनका मध्यवर्ग की समस्याओं के संदर्भ में अध्ययन हम इस अध्याय में करेंगे।

मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं को लेकर लिखा गया 'प्रतिज्ञा' प्रेमचन्द का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास के मध्यवर्गीय प्रधान पुरुष पात्रों में अमृतराय, कमला प्रसाद, बदरी प्रसाद व दाननाथ है और प्रमुख मध्यवर्गीय स्त्री पात्रों में प्रेमा, देवकी, सुमित्रा और पूर्णा मध्यवर्ग के चरित्रों को प्रस्तुत करने वाली नारियाँ हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक का अभीष्ट मध्यवर्ग के सुधारवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करना है।

डॉ0 इन्द्रनाथ मदान के अनुसार–"प्रतिज्ञा रक्तमास के पात्रों वाले उपन्यास की अपेक्षा विधवाओं के उद्धार की समस्या से अधिक सम्बन्ध रखता है पात्र और कथावस्तु दोनों ही सामाजिक ध्येय और सुधार–भावना के अधीन है।"[8] अतः 'प्रतिज्ञा' उपन्यास की कथावस्तु के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रेमचन्द का पूरा ध्यान मध्यवर्ग की समस्याओं को चित्रित करने में था। प्रस्तुत उपन्यास में मध्यवर्ग की प्रमुख समस्याओं जैसे–मध्यवर्ग की ईर्ष्या और दम्भ की प्रवृत्ति को दाननाथ पात्र द्वारा, संस्कारगत जड़ता को कमला प्रसाद द्वारा तथा मध्यवर्गीय जाग्रति और विवेक को अमृतराय द्वारा दिखाने का लेखक ने सुन्दर प्रयास किया है। इसी प्रकार मध्यवर्गीय नारी जीवन की समस्याओं को सुमित्रा व पूर्णा द्वारा दिखाने का प्रयास किया गया है। सुमित्रा मध्यवर्ग की नारी–चेतना का प्रतीक हैं तो पूर्णा में अबला जीवन प्रतिफलित हुआ है। पूर्णा समाज सुधार के लिए पुरुषों में सुधार को आवश्यक बताते हुए कहती है कि–"स्त्रियों का सुधाार करने की आवश्यकता नहीं है। पहले पुरुष लोग अपनी दशा तो सुधार ले, फिर स्त्रियों की दशा सुधारेंगे।"[9] इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में मध्यवर्ग की पात्र सुमित्रा ने नारी समस्या को उजागर किया तथा उसके समाधान की बात कही है। वह कहती हैं–"अपनी जायदाद के लिए संतान की ज़रूरत न होती तो कोई स्त्री की बात भी

न पूछता। जो स्त्रियाँ बाँझ रह जाती हैं उनकी कितनी दुर्दशा होती है–रोज़ ही देखती हो।"[10] आगे वह कहती है कि–"मज़ा तो तभी आए जब लड़की वाले लड़कियों का दहेज लेने लगें। बिना भरपूर दहेज लिए लड़की का ब्याह ही न करें तब पुरुषों के होश ठिकाने हो जाएँ।"[11] अतः उपर्युक्त वक्तव्य द्वारा सुमित्रा मध्यवर्गीय समाज की ज्वलंत समस्या दहेज–प्रथा की निन्दा करती हैं। उसके व्यक्तित्त्व से मध्यवर्ग की नारी की निर्भीकता व आर्थिक दृष्टि से अपने को स्वतन्त्र बनाने की भावना का परिचय मिलता है। इस प्रकार 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में विधवा–समस्या तथा दहेज की समस्या के साथ ही स्त्री की स्वतंत्रता, अधिकार भावना व जीविकोपार्जन आदि समस्याओं को भी लेखक ने स्पष्ट रूप से दिखाने का प्रयास किया है।

डॉ0 भटनागर के अनुसार–"प्रतिज्ञा का युग मध्यवर्ग के जागरण और संघर्ष का उषाकाल था अतः प्रेमचन्द का दृष्टिकोण भी इस उपन्यास में सुधारवादी रहा है। वे सुधार के द्वारा इस सामाजिक कुरीति को मिटाना चाहते थे।"[12] अतः मध्यवर्गीय समाज में पायी जाने वाली सामाजिक कुरीतियों का यथार्थ चित्रण 'प्रतिज्ञा' की प्रमुख विशेषता है।

प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'सेवासदन' ऐसा उपन्यास है जिसमें मध्यवर्ग की समस्या पर बड़ी सुन्दरता के साथ वृहत् रूप में प्रकाश डाला गया है। 'सेवासदन' उस युग की रचना है जिस समय नारी की स्थिति अत्यन्त पराधीन व दयनीय थी। एक प्रकार से 'सेवासदन' नारी जीवन की करुण गाथा है। 'सेवासदन' एक ऐसी लड़की पर लिखी रचना है जिसकी शादी एक ऐसे व्यक्ति से होती है जो अत्यन्त संकीर्ण, कृपण व क्रूर विचारधारा का होता है। जिसमें ईष्या की भावना भरी होती है, जो एक रात एक समारोह से अपनी पत्नी के देर से आने पर उसे घर से निकाल

देता है। 'सेवासदन' के सभी पात्र व घटना वेश्या–समस्या के चारों ओर घूमते हैं। 'सेवासदन' में लेखक ने प्रत्यक्ष रूप से मध्यवर्ग की दहेज–समस्या, अनमेल–विवाह, झूठा दिखावटी जीवन, रूढ़िवादिता आदि समस्याओं को उद्घाटित किया है तथा साथ ही उसका समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मध्यवर्गीय समाज की अधिकांश समस्याओं का मूल कारण आर्थिक विषमता है। अपने प्रसिद्ध लेख 'महाजनी सभ्यता' में प्रेमचन्द ने इसी आर्थिक विषमता को दिखाया है और स्पष्ट किया कि यही आर्थिक विषमता मध्यवर्ग के जीवन को खोखला कर देती है। मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक विषमता का एक उदाहरण प्रस्तुत है–आर्थिक परेशानियों से ग्रस्त 'सेवासदन' के दरोगा कृष्णचन्द विवश होकर कहते हैं कि–"यदि मैं पाप से न डरता, तो आज मुझे यूँ ठोकरें न खानी पड़ती। इस समय दोनों स्त्री–पुरुष चिन्ता में डूबे बैठे थे। बड़ी देर के बाद कृष्णचन्द्र बोले देख लिया, संसार में सन्मार्ग पर चलने का फल होता है। यदि आज मैंने लोगों को लूटकर अपना घर भर लिया होता तो लोग मुझसे सम्बन्ध करना अपना सौभाग्य समझते, नहीं तो कोई सीधे मुंह बात नहीं करता है।"[13] अतः धन के अभाव के कारण दरोगा कृष्णचन्द्र के पूरे परिवार को गर्त में जाना पड़ता है। यही धन का अभाव उन्हें रिश्वत लेने पर मजबूर करता है जिस कारण वह जेल चले जाते हैं और परिणामस्वरूप उनकी पुत्री सुमन का विवाह वृद्ध गजाधर प्रसाद से हो जाता है। इस प्रकार इन सभी परेशानियों का केवल एक कारण होता है, आर्थिक कमज़ोरी जो कि मध्यवर्गीय जीवन की सबसे बड़ी व मुख्य समस्या है चाहे वह प्रेमचन्द युगीन मध्यवर्गीय समाज में रही हो या वर्तमान समय में मध्यवर्गीय समाज की समस्या हो। 'सेवासदन' में दहेज–प्रथा मध्यवर्गीय समाज की प्रधान समस्या के रूप में हमारे सामने आयी है। 'सेवासदन' का प्रारम्भ सुमन के विवाह और

दहेज–समस्या से शुरू होता है सुमन की शादी के समय उसके परिवार को अनेक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है–"वर की खोज में दौड़ने लगे, कई जगहों से टिप्पणियाँ मंगवायीं। वह शिक्षित परिवार चाहते थे। वह समझते थे कि ऐसे घरो में लेन–देन की चर्चा न होगी, पर उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वरों का मोल उनकी शिक्षा के अनुसार है।"[14] प्रस्तुत कथन द्वारा लेखक ने शिक्षित मध्यवर्ग की खोखली मान्यता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। 'सेवासदन' की सुमन एक अच्छे परिवार की लड़की होते हुए भी वेश्या बनती है क्योंकि उसे योग्य पति नहीं मिलता है इसके अतिरिक्त 'सेवासदन' में दहेज–प्रथा के साथ ही वेश्या–समस्या, मध्यवर्गीय समाज की प्रमुख समस्या बनकर सामने आयी। सुमन का विवाह एक संकीर्ण मनोवृत्ति वाले निर्धन, अशिक्षित व कुलीन गजाधर से होता है अपनी संकीर्ण मानसिकता के रहते वह सुमन से कहता है–"मुझे जब तक तू यह न बता देगी कि सारी रात कहाँ रही तब तक मैं तुझे घर में न बैठने दूँगा, न बतायेगी तो आज से तू समझ ले कि तू मेरी कोई नहीं, तेरा जहाँ जी चाहे जा, जो मन आवे कर।"[15] अतः प्रस्तुत उदाहरण मध्यवर्गीय समाज की संकीर्ण विचारधारा और कुलीनता के अहं को दर्शाता है। यद्यपि प्रेमचन्द से पूर्व उपन्यासों में भी उपर्युक्त समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है परन्तु नारी के संघर्ष और मध्यवर्गीय समाज के दिखावे व खोखलेपन को प्रेमचन्द ने पहली बार प्रस्तुत किया है। इस प्रकार समाज में व्याप्त समस्याओं तथा इन नीचे गिरती हुई प्रवृत्ति को मध्यवर्ग की सीमा रेखा में देखने का प्रयत्न 'सेवासदन' में आदि से लेकर अन्त तक मिलता है।

"प्रेमाश्रम (1922) एक कृषि सम्बन्धी महाकाव्य हैं, जिसमें औद्योगिक सभ्यता से पहले के गांव की सामाजिक और आर्थिक दशा का पूर्ण चित्र मिलता है।"[16] अतः

इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने औद्योगिक सभ्यता से पहले की प्रत्येक स्थितियों का सफ़लतापूर्वक चित्रण किया है।

डॉ0 सुषमा धवन के अनुसार–"'प्रेमाश्रम' वास्तव में कृषक जीवन का महाकाव्य है, जिसमें एक विराट् चित्रपट पर भूमिपति तथा कृषक वर्ग के पारस्परिक संघर्ष का अंकन हुआ है।"[17] अतः प्रेमाश्रम में कृषक वर्ग और ज़मीदार वर्ग का चित्रण प्रधान रहा है तथा मध्यवर्ग का चित्रण गौण रूप में हुआ है। इस उपन्यास में गौस खाँ, ज्वाला सिंह, ईजाद हुसैन, प्रियनाथ चोपड़ा मध्यवर्ग की समस्याओं को उद्घाटित करने वाले पात्र है। ज्वालासिंह जो कि एक मध्यवर्गीय पात्र हैं। सरकारी कर्मचारी है। उन पर अंग्रेज़ी शासन, रहन–सहन व सभ्यता का पूरा प्रभाव है– "ज्वाला सिंह के बात व्यवहार में वह पहले की सी स्नेहमय सरलता न थी, वरन् उसकी जगह एक अज्ञात सहृदयता, एक कृत्रिम वात्सल्य, एक गौरव–युक्त साधुता पायी जाती थी, जो ज्ञानशंकर के घाव पर नमक का काम कर रही थी।"[18]

मध्यवर्ग पर अंग्रेज़ी रहन–सहन का प्रभाव सबसे अधिक रहा है। झूठी प्रदर्शनप्रियता इस वर्ग की प्रमुख विशेषता है। ज्वालासिंह इसी प्रकार के व्यक्ति हैं वह अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए बेईमानी, झूठ तथा तरह–तरह के हथकंडे अपनाते हैं। इसी कारण उनके अन्दर का देश प्रेम भी समाप्त होता जाता है। 'प्रेमाश्रम' में प्रेमचन्द ने वकीलों व डॉक्टरों की स्वार्थपरता का भी चित्र खींचा है। एक प्रकार से यह मध्यवर्ग की स्वार्थपूरक नीति को दर्शाता है–"ज्वालासिंह गर्म होकर बोले–अगर आप समझते हो कि वकालत या डॉक्टरी विशेष रूप से आत्मरक्षा के अनुकूल है तो आपकी भूल है; मेरे चचा साहब वकील हैं, बड़े भाई साहब डॉक्टरी करते हैं पर वह लोग केवल धन कमाने की मशीने हैं, मैंने उन्हें कभी असत्–सत् के झगड़े में पड़ते हुए नहीं पाया।"[19] अतः 'प्रेमाश्रम' में मध्यवर्ग की प्रदर्शनप्रियता, स्वार्थपरक नीति व

अत्याचारी प्रवृत्ति का अंकन प्रेमचन्द ने स्पष्ट रूप से दिखाने का प्रयास किया है। यद्यपि प्रेमचन्द ने 'प्रेमाश्रम' उपन्यास कृषक वर्ग की समस्या को लेकर लिखा किन्तु इसमें मध्यवर्ग की समस्या साथ–साथ गौण रूप में चलती रही है।

प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'वरदान' उपन्यास का सम्बन्ध भी मध्यवर्गीय जीवन व उसकी समस्याओं से है। 'वरदान' के मुख्य पात्रों में डिप्टी श्यामाचरण, मुंशी संजीवन लाल तथा मुंशी शालिग्राम मध्यवर्गीय परिवारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'वरदान' में मध्यवर्ग की प्रेम–विवाह की समस्या, झूठी प्रदर्शनप्रियता, स्वार्थ की भावना, स्वाभिमान आदि समस्याओं पर लेखक ने प्रकाश डालने का सुन्दर प्रयास किया है इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में मध्यवर्ग की देश भक्ति की उत्कृष्ट भावना का प्रदर्शन देखने को मिलता है। मुंशी शालिग्राम की पत्नी सुवामा देवी की उपासना करके–"संसार का सबसे उत्तम पदार्थ सपूत बेटा मांगती है जो अपने देश का उपकार करे।"[20] आगे वह कहती है कि–"बेटी, मेरी यह हार्दिक अभिलाषा थी कि मेरा लड़का संसार में प्रतिष्ठित हो और ईश्वर ने मेरी लालसा पूरी कर दी। प्रताप ने पिता और कुल का नाम उज्जवल कर दिया। देश का उपकार करने से मैं उन्हें नहीं रोकतीं मैंने तो देवीजी से यही वरदान मांगा था।"[21] इस प्रकार सुवामा का पुत्र प्रताप अपनी माँ की सारी आकांक्षाओं पर खरा उतरता है तथा मध्यवर्ग की देशभक्ति, कर्तव्यपरायणता और जागरुकता का प्रतीक है। वह अहिंसावादी प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है। इसके अतिरिक्त 'वरदान' में मध्यवर्गीय नारी जीवन की समस्या का प्रतिनिधित्व सुवामा, विरजन, माधवी व सुशीला करती हैं। इन स्त्री पात्रों द्वारा लेखक ने मध्यवर्गीय जीवन में प्रेम–विवाह, स्त्री–स्वतंत्रता, स्त्री के आत्मसम्मान आदि की समस्याओं को उद्घाटित किया है।

डॉ0 इन्द्रनाथ मदान के अनुसार– "वरदान भी ऐसी ही प्रारम्भिक कृति है, जिसका सम्बन्ध मध्यवर्ग के जीवन से है।"[22] अतः 'वरदान' उपन्यास का सम्बन्ध भी मध्यवर्गीय जीवन व उसकी समस्याओं से है।

प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु भी मध्यवर्ग पर आधारित है। 'निर्मला' के सभी पात्र मध्यवर्ग के है। 'निर्मला' उपन्यास पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ0 मंजुलता सिंह लिखती हैं–"उपन्यास की कथावस्तु तीन प्रमुख परिवारों से सम्बन्धित है। पहला परिवार निर्मला के पिता बाबू उदयभानु का; दूसरा बाबू बालचन्द्र सिन्हा का और तीसरा बाबू तोताराम वकील का है।"[23] 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु इन तीनों परिवारों के चारों ओर घूमती हुई नज़र आती है और ये तीनों परिवार मध्यवर्ग से सम्बन्धित हैं। प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की दहेज–समस्या, अनमेल–विवाह, रूढ़िवादिता, संकीर्ण विचारधारा व प्रेम से सम्बन्धित समस्याओं को दिखाया है। प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'निर्मला' उपन्यास मुख्य रूप से मध्यवर्गीय नारी जीवन की प्रत्येक स्थितियों व समस्याओं से सम्बन्धित है। 'निर्मला' उपन्यास की मुख्य समस्या दहेज की है चूँकि मध्यवर्ग समाज का वह वर्ग है जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न नहीं होता है फिर भी रिती–रिवाजों व दिखावे की दृष्टि से सदैव उच्चवर्ग से होड़ लेता है परिणामस्वरूप या तो वह सदैव कर्ज़ में डूबा रहता है या आर्थिक संघर्ष से पिसता रहता है। इसका एक उदाहरण इसी उपन्यास का बाबू उदयभानु का परिवार है उदयभानु झूठी प्रदर्शनप्रियता व दिखावे को स्थायी रखते हैं चाहे उन्हें कितने ही कर्ज़ में क्यों न डूबना पड़े। उदयभानु का परिवार एक मध्यवर्गीय परिवार है। उदयभानु कहते हैं–"क्या करूँ, जग–हंसाई भी तो अच्छी नहीं लगती। शिकायत हुई तो लोग कहेंगे, नाम बड़े और दर्शन छोटे। फिर जब वह मुझसे दहेज में एक पाई नहीं लेते, तो मेरा भी यह कर्तव्य है कि

मेहमानों के आदर–सत्कार में कोई बात न उठा रखूँ।"[24] अतः मध्यवर्गीय जीवन में दिखावे के जीवन का बोलवाला सदैव रहा है यही कारण है कि मध्यवर्गीय समाज का प्रत्येक व्यक्ति झूठी शान व बाह्य आकर्षण के पीछे दौड़ता हुआ नज़र आता है। दहेज–समस्या के अतिरिक्त प्रस्तुत उपन्यास में अनमेल–विवाह भी मध्यवर्गीय समाज की एक मुख्य समस्या बनकर सामने आयी है मध्यवर्गीय समाज में प्रदर्शनप्रियता व दहेज–समस्या का परिणाम अनमेल–विवाह के रूप में सामने आता है। निर्धन निर्मला का विवाह एक अधेड़ व्यक्ति तोताराम से इसलिए होता है क्योंकि कल्याणी विवश होती है वह दहेज नहीं दे सकती थी मजबूर होकर निर्धनता के कारण कल्याणी को निर्मला का हाथ तोताराम के हाथ में सौंपना पड़ता है। विवशता की स्थिति में कल्याणी कहती है–"वहाँ एक हज़ार देने को कहाँ से आएगा? एक हज़ार तो आपका अनुमान है शायद वह मुँह फैलाएँ। ज़मींदार साहब चार हज़ार सुनाते हैं। डाक बाबू भी दो हजार का सवाल करते है। इनको जाने दीजिए। बस, वकील साहब ही बच रहे, पैंतीस साल की उम्र भी कोई ऐसी ज्यादा नहीं। इन्हीं को क्यों न रखिए।"[25] उपर्युक्त तथ्य मध्यवर्गीय समाज की दहेज–समस्या व अनमेल–विवाह का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार प्रेमचन्द ने 'निर्मला' उपन्यास में नारी का जीवन मध्यवर्ग की आर्थिक, सामाजिक व अनेक कठिनाईयों के बीच घुटता हुआ दिखाया है। अतः स्पष्ट है कि 'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचन्द ने एक प्रकार से मध्यवर्गीय जीवन की सम्पूर्ण झाँकी प्रस्तुत की है, वह मध्यवर्गीय जीवन जो अनेक आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों के बीच पिसता रहता है यद्यपि इसका ज़िम्मेदार कोई एक व्यक्ति नहीं होता है बल्कि वह परिस्थितियाँ ज़िम्मेदार होती हैं जिनसे मध्यवर्गीय समाज निर्मित होता है। संक्षेप में प्रेमचन्द का 'निर्मला' उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन का जीता–जागता चित्र है।

"रंगभूमि में औद्योगिक समस्या प्रमुख है। अतः इस उपन्यास में थैलीशाहों अथवा पूँजीपतियों का उल्लेख ही अधिक है। किसानों और ग्रामीण जनता का भी चित्रण समानान्तर हुआ है।"[26] अतः 'रंगभूमि' में औद्योगिक समस्या प्रधान रूप में हमारे सामने आती है तथा साथ ही निम्नवर्ग व उच्चवर्ग की समस्या भी मुख्य रही है। प्रेमचन्द ने 'रंगभूमि' उपन्यास में मध्यवर्ग की समस्याएँ ताहिर अली के परिवार द्वारा प्रस्तुत की हैं। वह एक निम्न–मध्यवर्ग का व्यक्ति है ताहिर अली के परिवार द्वारा निम्न–मध्यवर्ग की झूठी शान–शौकत, आर्थिक दशा, पारिवारिक कलह जैसी समस्याएँ प्रेमचन्द ने प्रस्तुत की हैं। ताहिर अली जानसेवक से कहता है–"हुजूर, मुझे ख़ुद फ़िक्र है, क्या जानता नहीं हूँ कि मालिक को चार पैसे का नफा न होता, तो वह यह काम करेगा ही क्यों? अगर हुजूर ने मेरी जो तनख्वाह मुकर्रर की है उसमें गुज़ारा नहीं होता। बीस रुपये का तो गल्ला ही काफ़ी नहीं होता, और सब ज़रूरतें अलग।"[27] अतः यह तथ्य मध्यवर्ग की आर्थिक दशा को प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त इस उपन्यास में डॉ0 गांगुली मध्यवर्ग की राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करने वाले पात्र है। उनके व्यवहार में आक्रोश मध्यवर्ग की संघर्ष करने की भावना को दर्शाता है तथा उनका ध्यान व विचार मध्यवर्ग की राष्ट्रीय चेतना को दर्शाता है। एक स्थान पर डॉ0 गांगुली कहते हैं कि–"इससे कौन इनकार कर सकता है कि ये लोग कितने न्यायप्रिय होते हैं"[28] अतः हम पूरे उपन्यास में डॉ0 गांगुली को मध्यवर्ग की राष्ट्रीय भावना का प्रतिनिधित्व करते हुए पाते हैं। साथ ही प्रेमचन्द ने 'रंगभूमि' उपन्यास में संयुक्त परिवार की समस्या को भी उठाया है जो निम्न–मध्यवर्गीय परिवार को अन्दर से खोखला करती जाती है। ताहिर अली का परिवार इसका एक उदाहरण है। साथ ही प्रस्तुत उपन्यास में सोफिया, कुलसुम आदि मध्यवर्गीय नारी जीवन की समस्या को दर्शाती हुई दिखती है। कुलसुम

आदर्शों की पक्की है वह आर्थिक कष्ट उठाकर भी अपने आदर्शों को बनाये रखती है–"इन रुपयो को लौटाकर कुलसुम का मस्तक गर्व से उन्नत हो गया। आज उसे पहली बार ताहिर अली पर अभिमान हुआ। यह इज़्ज़त है कि पीठ पीछे दुनिया बड़ाई करती रहे। उस बेइज़्ज़ती से तो मर जाना ही अच्छा कि छोटे–छोटे आदमी मुँह पर लताड़ सुनाएँ। कोई लाख उनको मिटाए, पर दुनिया तो इंसाफ करती है। रोज़ ही तो अमले सजा पाते रहते हैं कोई तो उनके बाल–बच्चों की बात नहीं पूछता, बल्कि उल्टे और लोग ताने देते हैं, आज उनकी नेकनामी ने मेरा सिर ऊँचा कर दिया"[29]। इस प्रकार कुलसुम का कथन मध्यवर्गीय नारी के आदर्शों व हौसले को दर्शाता है जो सदैव अपने जीवन के आदर्शों का पालन करती है। संक्षेप में प्रेमचन्द का 'रंगभूमि' उपन्यास औद्योगिक समस्या को साथ लेकर चलने के अतिरिक्त निम्न–मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं व संघर्षों को उद्‌घाटित करता है।

'कायाकल्प' प्रेमचन्द कृत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में पूर्व जन्म के चमत्कारों के वर्णन के साथ मध्यवर्गीय जीवन का भी अंकन हुआ है। डॉ0 मंजुलता सिंह के अनुसार–"कायाकल्प में प्रधान रूप से 6 प्रसंग है– (1) चक्रधर–मनोरमा की कथा; (2) अहिल्या–चक्रधर की कथा; (3) मनोरमा–विशाल सिंह की कथा; (4) रोहिणी–विशाल सिंह की कथा; (5) महेन्द्र सिंह–देवाप्रिया की कथा; (6) हरिसेवक–लौंगी की कथा"[30]। अतः इस उपन्यास की कथा को हम 6 भागों में अत्यन्त रोचक ढंग से विभाजित किया हुआ पाते हैं जो अलग–अलग घटनाओं पर उतरते हुए दिखायी देती है।

डॉ0 सुषमा धवन के अनुसार–"इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने उपन्यास के क्षेत्र में नवीन प्रयोग का आश्रय लिया है और अपनी मध्यवर्गीय सुधार–भावना को व्यंजित करने के लिए चक्रधर, मनोरमा, अहिल्या, लौंगी आदि के चरित्रों की सृष्टि की है।

उनकी मूल विचारधारा की अभिव्यक्ति इन पात्रों के माध्यम से हो पाई है परन्तु योगाभ्यास, पूर्वजन्म और कायाकल्प के आधि–भौतिक पचड़ों के समावेश के कारण अपूर्ण सी रह जाती है"[31] इस तथ्य से स्पष्ट है कि 'कायाकल्प' उपन्यास प्रेमचन्द का नया प्रयोग है जिसमें मध्यवर्गीय समाज की सुधार भावना निहित है तथा इस उपन्यास में उन्होंने जिन पात्रों का चित्रण किया है उनके माध्यम से उनकी विचारधारा स्वयं अभिव्यक्त होती है। 'कायाकल्प' उपन्यास में चक्रधर का परिवार मध्यवर्ग से सम्बन्ध रखता है स्वयं उसका जीवन, विचार व भावनाएँ एक प्रगतिशील मध्यवर्गीय समाज का प्रतीक है। चक्रधर के पिता वज्रधर पुराने विचारों के मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके अतिरिक्त यशोदानन्द, हरिसेवक सिंह, बागीश्वरी भी मध्यवर्ग के पात्र हैं। जिनके द्वारा प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक समस्याओं का चित्रण किया है। इस उपन्यास में मध्यवर्ग की सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत दहेज–प्रथा, विधवा–समस्या, प्रेम–विवाह आदि का चित्रण हुआ है। चक्रधर प्रेम को एक शक्ति के रूप में मानता है उसके अनुसार प्रेम के द्वारा हर प्रकार की विपत्ति का सामना किया जा सकता है। एक स्थान पर चक्रधर की आँखें करुणादि हो गयीं वह अहिल्या से बोले–"तुम इन बातों को भूल जाओ। हम और तुम प्रेम का आनन्द भोग करते हुए संसार के सब कष्टों और संकटों का सामना कर सकते हैं। ऐसी कोई विपत्ति नहीं है, जिसे प्रेम न टाल सके।"[32] अतः अनेकों समस्याओं के साथ ही इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने सांस्कृतिक जीवन को भी उठाया है। 'कायाकल्प' में धर्म और राजनीति को एक साथ देखा जा सकता है और उसी धर्म का भयानक रूप, साम्प्रदायिक दंगे, जाति–भावना, छुआछूत आदि के रूप में देखने को मिलता है। चक्रधर के माध्यम से प्रेमचन्द ने मध्यवर्गीय समाज की धार्मिक भावना पर बल देते

हुए धार्मिक समन्वय व मूलभूत एकता की बात कही है और मनुष्यता को सर्वोपरि बताया है। चक्रधर विरक्त होकर कहते है–"हमें कृष्ण, राम, ईसा, मुहम्मद, बुद्ध सभी महात्माओं का समान आदर करना चाहिए। ये मानव जाति के निर्माता हैं। जो इनमें से किसी का अनादर करता है या उनकी तुलना करने बैठता है, वह अपनी मूर्खता का परिचय देता है। बुरे हिन्दू से अच्छा मुसलमान उतना ही अच्छा है, जितना बुरे मुसलमान से अच्छा हिन्दू। देखना यह चाहिए कि वह कैसा आदमी है न कि यह कि किस धर्म का आदमी है। संसार का भावी धर्म सत्य, न्याय और प्रेम के आधार पर बनेगा।"[33] इस प्रकार प्रेमचन्द ने 'कायाकल्प' में मध्यवर्ग के उदारवादी व धार्मिक सहिष्णुता के दृष्टिकोण को दिखाने का प्रयास किया है तथा प्रगतिशील जीवन को आगे बढ़ाने के साथ–साथ समाज, धर्म व देश सभी को उन्नति व प्रगति के मार्ग पर बढ़ाना चाहा है।

प्रेमचन्द कृत 'ग़बन' के विषय पर डॉ0 महेन्द्र भटनागर लिखते हैं कि– "वास्तव में देखा जाये तो 'गबन' प्रेमचन्द का मध्यवर्ग की समस्याओं का उद्घाटन करने वाला सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।"[34] यद्यपि प्रेमचन्द के अन्य उपन्यासों में उच्चवर्ग तथा निम्नवर्ग के साथ मध्यवर्ग की समस्या का चित्रण हुआ है, किन्तु 'ग़बन' में प्रेमचन्द की दृष्टि मुख्य रूप मध्यवर्ग की समस्या पर रही है।

डॉ0 इन्द्रनाथ मदान के अनुसार–"यदि 'सेवासदन' (1914) मध्यवर्ग के जीवन का चित्रण करने वाला प्रथम उपन्यास हैं तो 'ग़बन' (1930) अन्तिम कृति है।"[35] अतः 'ग़बन' में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की है। संक्षिप्त रूप में 'ग़बन' मध्यवर्ग की विडम्बनाओं व विषमताओं का वास्तविक चित्रण है। 'ग़बन' में प्रेमचन्द ने मध्यवर्गीय समाज से सम्बन्धित खोखली प्रदर्शनप्रियता, विधवा–समस्या, दहेज–समस्या,

आभूषणप्रियता, पुलिस की धूर्त मानसिकता व एक सम्मिलित कुटुम्ब की समस्या का यर्थाथ रूप में चित्रण किया है। बाह्य आडम्बर व ऊपरी दिखावा मध्यवर्गीय समाज की सबसे बड़ी समस्या है। 'ग़बन' के कुछ प्रमुख पात्र जैसे–जालपा, रमेश, दयानाथ, रमानाथ आदि इसी दिखावे के जीवन में अपना आत्मगौरव समझते हैं। दयानाथ से अधिक प्रदर्शनप्रियता व दिखावा रमानाथ के चरित्र में है। पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर भी रमानाथ अपने शौक पूरे करने से बाज़ नहीं आता है। "रमानाथ में इतनी लगन न थी, उधर दो साल से वह बिल्कुल बेकार था। शतरंज खेलता, सैर–सपाटे करता, माँ और छोटे भाईयों पर रोब जमाता। दोस्तों की बदौलत शौक पूरा होता रहता था। किसी का चेस्टर मांग लिया और शाम को हवा खाने निकल गए। किसी का पंप–शू पहन लिया, किसी की घड़ी कलाई पर बांध ली। कभी बनारसी फैशन में निकले, तो कभी लखनवी फैशन में। दस मित्रों में एक–एक कपड़ा बनवा लिया तो दस सूट बदलने का साधन हो गया।"[36] उपर्युक्त उदाहरण मध्यवर्ग के दिखावे के जीवन का साफ़ चित्रण प्रस्तुत करता है। रमानाथ के साथ जालपा भी दिखावे के जीवन में विश्वास रखती हैं उसके द्वारा मध्यवर्गीय समाज की आभूषण प्रियता के प्रति उत्सुकता का चित्र हमारे सामने आता है– "जालपा को गहनों से जितना प्रेम था, उतना कदाचित् संसार की और वस्तु से न था।"[37] 'ग़बन' के रमेश बाबू, रमानाथ, दयानाथ आदि खोखले जीवन व दिखावे पर बहुत विश्वास रखते हैं। रमानाथ की नौकरी लग जाने पर वह ऊपरी दिखावे को और महत्त्व देने लगता है–"दूसरे दिन नया सूट बनवाया और फैशन की कितनी ही चीज़ें खरीदी। ससुराल से मिले हुए रुपये कुछ बच रहे थे। कुछ मित्रों से उधार ले लिये। वह साहबी ठाठ बनाकर सारे दफ़्तर पर रोब जमाना चाहता था। कोई उससे वेतन तो पूछेगा नहीं, महाजन लोग उसका ठाठ–बाट देखकर सहम जायेंगे। वह

जानता था अच्छी आमदनी तभी हो सकती है जब अच्छा ठाठ हो।"[38] इस प्रकार 'ग़बन' उपन्यास का सम्पूर्ण मध्यवर्गीय समाज झूठे दिखावे व प्रदर्शनप्रियता का भरण पोषण कर अपने आपको प्रवचित करता है। इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने 'ग़बन' में मध्यवर्ग के संयुक्त परिवार की समस्या को उठाने के साथ–साथ रतन और वकील साहब के माध्यम से अनमेल–विवाह की समस्या को भी उठाने का प्रयास किया है साथ ही आर्थिक समस्या के चलते प्रेमचन्द ने प्रस्तुत उपन्यास में मध्यवर्गीय समाज की रिश्वत लेने की समस्या को भी दिखाने का प्रयास किया है जिसका हल मिलना अत्यन्त मुश्किल होता है। अतः स्पष्ट है कि 'ग़बन' में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग की अधिकांश समस्याओं का यथार्थपूर्ण रूप में अंकन किया है साथ ही उन्होंनें अपने आदर्श एवं सुधारवादी दृष्टिकोण के कारण पात्रों की विशेषताओं को परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया है। मध्यवर्गीय प्रवृत्तियों के चित्रण की दृष्टि से प्रेमचन्द के अन्य उपन्यासों में 'ग़बन' सबसे सजीव एवं सफ़ल उपन्यास है।

'कर्मभूमि' प्रेमचन्द कृत मध्यवर्ग की राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करने वाला सशक्त उपन्यास है। राजनीतिक चेतना के अतिरिक्त 'कर्मभूमि' में मध्यवर्ग की आर्थिक, धार्मिक व सामाजिक चेतना भी अभिव्यक्त हुयी है। 'कर्मभूमि' के विषय में डॉ0 मंजुलता सिंह लिखती हैं कि–"कर्मभूमि स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न आन्दोलनों का इतिहास है।"[39] अतः 'कर्मभूमि' में राष्ट्रीय आन्दोलन का संपूर्ण चित्रण व्याप्त हुआ है। राष्ट्रीय राजनीति को बड़े ही सजीव रूप में प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में दिखाया है। 'कर्मभूमि' का कथानक भी एक मध्यवर्ग के परिवार से शुरू होता है। लाला समरकान्त भी दूसरे महाजन की तरह एक–एक रुपया एकत्रित करते हैं तथा उस रूपये को एकत्रित करने में उचित–अनुचित का सहारा लेते हैं। लाला समरकान्त का पुत्र अमरकान्त पिता की इस नीति का शुरू से ही विरोध करता है।

'कर्मभूमि' उपन्यास की कथा, राष्ट्रीय आन्दोलनों, संघर्षों व विरोधों आदि को लेकर आगे बढ़ती है। डॉ0 मंजुलता सिंह का विचार है–"कर्मभूमि में वर्ग विभाजन के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से चरित्रों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है, शोषक, शोषित और सुधारक। मध्यवर्ग की सीमा में प्रमुख रूप से इसी सुधारक वर्ग को रख सकते हैं।"[40] इस प्रकार कर्मभूमि का सुधारक वर्ग ही मध्यवर्गीय समाज के अन्तर्गत आता है जो शोषण करने वालों के विरुद्ध आवाज़ उठाता है इस वर्ग में सुखदा, शान्ति कुमार तथा अमरकान्त जैसे पात्र आते हैं। इनके अतिरिक्त, मुन्नी, रेणुका, सलीम, नैना आदि भी महत्त्वपूर्ण मध्यवर्गीय पात्र हैं। इस उपन्यास के सभी मध्यवर्गीय पात्र समाज कल्याण व समाज सेवा की भावना लेकर मानव जाति तथा मानव धर्म की मंगल कामना तथा सत्यकार्यों के प्रति प्रयत्न करते रहते हैं सदैव मानव जीवन की सुख–शान्ति की कामना करते हैं साथ ही इस युग की सामाजिक व राजनीतिक उथल–पुथल तथा अनेक परिस्थितियों को बदलने के लिए संघर्षरत रहते हैं। मध्यवर्ग उस समय कितनी तत्परता व सक्रियता से स्वतंत्रता प्राप्ति व राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग ले रहा था तथा तत्कालीन राजनीति ने उस समय मध्यवर्ग को कितना प्रभावित किया, इसका उदाहरण है, प्रेमचन्द कृत 'कर्मभूमि'। साथ ही 'कर्मभूमि' में प्रेमचन्द ने यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार गांधीवादी अहिंसा नीति द्वारा देश की आज़ादी के लिए मध्यवर्गीय समाज सदैव तत्पर रहता है व प्रयत्न करता है। 'कर्मभूमि' का नायक अमरकान्त इस पर महीनों विचार करता है–"वह मानता था, संसार में पशुबल का प्रभुत्व है, किन्तु पशुबल को भी न्यायबल की शरण लेनी पड़ती है। आज बलवान से बलवान राष्ट्र में भी यह साहस नहीं है कि वह किसी निर्बल राष्ट्र पर खुल्लम–खुल्ला यह कहकर हमला करे कि 'हम तुम्हारे ऊपर राज करना चाहते हैं, इसलिए तुम हमारे अधीन हो

जाओ। उसे अपने पक्ष को न्यायसंगत दिखाने के लिए कोई न कोई बहाना तलाश करना पड़ता है। बोला अगर तुम्हारा खयाल है कि खून और कत्ल से किसी कौम की नजात हो सकती है तो तुम सख्त गलती पर हो। मैं इसे नजात नहीं कहता कि एक जमाअत के हाथों से ताकत निकलकर दूसरी जमाअत के हाथों में आ जाये, और वह भी तलवार के ज़ोर से राज करे। मैं नजात उसे कहता हूँ कि इन्सान में इन्सानियत आ जाये और इन्सानियत की बेइन्साफी और खुदगर्ज़ी से दुश्मनी है।"[41] इस प्रकार उपर्युक्त कथन यह स्पष्ट करता है कि अमरकान्त मानवतावादी तथा आदर्शवादी जीवन पद्धति को लेकर चलता है और मध्यवर्ग की गांधीवादी विचारधारा को प्रदर्शित करता है। अमरकान्त के स्वरों से सदैव पूरा मध्यवर्गीय समाज बोलता है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में पुरुष से कहीं अधिक राजनीतिक व सामाजिक चेतना नारी समाज में दिखाई देती है। सुखदा, नैना, कुन्ती तथा सकीना आदि मध्यवर्गीय नारियाँ हैं जो राजनीतिक तथा सामाजिक कार्यों में सक्रिय भाग लेती हैं। सुखदा किसानों और मज़दूरों का नेतृत्व करती है–"सुखदा के मुख पर आत्म गौरव की झलक आ गयी–हमें न्याय की लड़ाई लड़नी है, न्याय हमारी मदद करेगा। हम और किसी की मदद के मोहताज नहीं है।"[42] इस प्रकार प्रेमचन्द ने सुखदा के माध्यम से मध्यवर्ग की नारी की कर्मठता, न्यायप्रियता, जागरुकता व दृढ़ चरित्र का विवेचन किया है। राजनीतिक समस्याओं के अतिरिक्त प्रेमचन्द ने 'कर्मभूमि' में अनेक सामाजिक समस्याओं जैसे– अछूत–समस्या, प्रेम–विवाह समस्या, शिक्षा, आर्थिक मन्दी व धार्मिक पाखण्डता की भी स्थान–स्थान पर चर्चा की है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में मध्यवर्ग के विचार धर्म के सम्बन्ध में सदैव क्रान्तिकारी रहे हैं। सकीना और अमरकान्त के प्रसंग द्वारा प्रेमचन्द ने प्रेम विवाह जैसी सामाजिक समस्या को कुछ इस प्रकार दिखाने का प्रयास किया है–"सहसा सकीना ने उसका हाथ पकड़कर

रोते हुए कहा बाबूजी मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ। जिन्हें अपनी आबरू प्यारी है वह अपनी आबरू लेकर चाटें। मैं बे–आबरू ही रहूँगी। अमरकान्त ने हाथ छुड़ा लिया और आहिस्ता से बोला ज़िन्दा रहेंगे तो फिर मिलेंगे सकीना, इस वक्त जाने दो। मैं अपने होश में नहीं हूँ। यह कहते हुए उसे कुछ समझकर दोनों साड़ियाँ सकीना के हाथ में रख दी और बाहर चला गया।"[43]

अतः स्पष्ट है कि प्रेमचन्द कृत 'कर्मभूमि' में हमें तत्कालीन भारतीय मध्यवर्ग के जीवन का सम्पूर्ण एवं विस्तृत चित्रण देखने को मिलता है। जिसमें प्रेमचन्द ने तद्युगीन राजनीतिक पारिस्थितियों के बीच ही सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक समस्याओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है साथ ही महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि उनकी दृष्टि राजनीतिक, धार्मिक व सामाजिक परिस्थितियों के चलते सदैव नवजागरण की ओर रही है।

प्रेमचन्द कृत 'गोदान' उपन्यास का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण जीवन की अनेक परिस्थितियों को लेकर उसके विविध पहलुओं को उद्घाटित करना है। प्रेमचन्द ने 'गोदान' में ग्रामीण जीवन के वर्णन के साथ शहरी जीवन का भी वर्णन किया है। उन्होंने 'गोदान' में जिस शहरी वातावरण का वर्णन किया है उसका मध्यवर्ग की दृष्टि से बहुत महत्त्व है। 'गोदान' उपन्यास में मध्यवर्ग तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं को उद्घाटित करने वाले पात्र प्रो0 मेहता, मालती, ओंकारनाथ, सरोज व मिस्टर कौल आदि हैं। इन पात्रों के माध्यम से प्रेमचन्द ने मध्यवर्गीय समाज की प्रेम विवाह की समस्या, दम्पत्ति के अधिकार, दायित्व, स्त्री स्वातन्त्रताय, शिक्षा, पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण, आर्थिक समस्या, धार्मिक मान्यताएँ, देश–प्रेम की भावना तथा मध्यवर्ग की प्रदर्शनप्रियता आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है। मालती के पिता मिस्टर कौल के चरित्र को स्पष्ट करते हुए प्रेमचन्द लिखते हैं–"मालती के पिता

विचित्र जीवों में से थे जो केवल जुबान की मदद से लाखों के वारे–न्यारे करते थे। बड़े–बड़े ज़मीदारों और रईसों की जायदाद बिकवाना उन्हें कर्ज दिलाना या उनके मुआमलों को अफसरों से मिलकर तय करा देना, यही उनका व्यवसाय था। दूसरे शब्दों में वे दलाल थे।"[44] इस तरह मध्यवर्गीय मानसिकता के अनुसार मिस्टर कौल के दिखावे का जीवन व झूठी प्रदर्शनप्रियता चरम सीमा पर पहुँच जाती है और वह दिखावे के जीवन पर ही पूर्ण विश्वास करने लगते हैं। पाश्चात्य सभ्यता का उन पर पूरा प्रभाव रहता है। इसके अतिरिक्त 'गोदान' में मध्यवर्ग के पात्रों में एक वर्ग ऐसा होता है जो विवाह को वैयक्तिक दृष्टि से देखता है सामाजिक दृष्टि से नहीं। उस वर्ग पर पाश्चात्य सभ्यता का पूरा प्रभाव दिखायी देता है। मालती की बहन सरोज इसी वर्ग के पात्रों में है–"सरोज उत्तेजित होकर बोली–हम पुरुषों से सलाह नहीं मांगती, अगर वह अपने बारे में स्वतन्त्र है, तो स्त्रियाँ भी अपने विषय में स्वतंत्र हैं। युवतियाँ अब विवाह को पेशा नहीं बनाना चाहती हैं। वह केवल प्रेम के आधार पर विवाह करेंगी।"[45] अतः उपर्युक्त कथन द्वारा हम स्त्री स्वतंत्रता तथा पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव दोनों को साथ देख सकते हैं। प्रेमचन्द 'गोदान' में मध्यवर्ग की इन दोनों समस्याओं को उद्‌घाटित करने में सफ़ल हुए हैं। इसके अतिरिक्त 'गोदान' की मिस मालती मध्यवर्ग की ऐसी नारी है जिनकी दृष्टि में प्रेम जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है। वह प्रेम में जीवन को निहित मानती है–"मेहता ने नौका को पानी में डालकर मालती का हाथ पकड़कर कहा, आओ, बैठो! मालती ने सशंक होकर कहा, दो आदमियों का बोझ संभाल लेगी? मेहता ने दार्शनिक मुस्कान के साथ कहा, जिस तरी पर बैठे हम लोग जीवन यात्रा कर रहे हैं, वह तो इससे कहीं निस्सार है मालती? क्या डर रही हो? 'डर किस बात का जब तुम मेरे साथ हो।"[46] अतः प्रेमचन्द ने मालती और मेहता के प्रसंग द्वारा मध्यवर्गीय समाज की प्रेम–भावना को

दर्शाया है। प्रेमचन्द समाज में धन के समान वितरण के पक्षपाती है जिसकी अभिव्यक्ति व मेहता के माध्यम से करते हैं–"मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि हम या तो साम्यवादी हैं या नहीं हैं, हैं तो उसका व्यवहार करें, नहीं हैं तो बकना छोड़ दें। मैं नकली जिन्दगी का विरोधी हूँ।"[47] अतः 'गोदान' में प्रेमचन्द ने आर्थिक समस्या को तथा धन के समान वितरण के प्रश्न को बड़े सार्थक रूप में उद्घाटित किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'गोदान' में धार्मिक समस्याओं के अन्तर्गत मध्यवर्गीय जीवन की खोखली नैतिकता को प्रदर्शित किया है साथ ही शहरी जीवन की समस्या भी मुख्य रूप में रही है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रेमचन्द जीवन तथा समाज के प्रति गम्भीर आस्था रखने वाले व्यक्ति थे साथ ही कृषक समाज के उत्थान व विकास के प्रति सदैव आकांक्षी थे। समाज के विकास व उत्थान की चेतना उन्हें मध्यवर्ग के लोगों में मिली तथा 'गोदान' में उन्होंने प्रोफेसर मेहता के चरित्र द्वारा स्वयं की मध्यवर्गीय विचारधार को प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द ने प्रो0 मेहता के माध्यम से 'गोदान' में जिस भारतीयता का समर्थन किया उससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि प्रेमचन्द मध्यवर्ग के गौरव को भूल नहीं सके। इस प्रकार 'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य होते हुए भी मध्यवर्ग की चेतना को प्रस्तुत करने में सफ़ल रहा है।

इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द कृत अपूर्ण उपन्यास 'मंगलसूत्र' में भी मध्यवर्ग की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक आदि समस्याओं के संकेत मिलते हैं। 'मंगलसूत्र' के सभी पात्र जैसे–देवकुमार, साधु कुमार, संत कुमार, गिर्धरदास, डॉ0 सिन्हा, पुष्पा, शैव्या व पंकजा आदि मध्यवर्ग के पात्र हैं। 'मंगलसूत्र' में इन पात्रों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज की कई विशेषताएँ व समस्याएँ हमारे सामने आती है। यदि प्रेमचन्द 'मंगलसूत्र' को पूरा कर पाते तो निश्चित रूप से यह मध्यवर्ग की

संघर्ष प्रधान यथार्थवादी विचारधारा से युक्त रचना होती। 'मंगलसूत्र' में मध्यवर्गीय सामाजिक समस्या के अन्तर्गत नारी की स्वतंत्रता को महत्त्वपूर्ण माना गया है। आज की नारी पुरुष की दासता व अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए आत्मनिर्भरता को आवश्यक मानती है। पुष्पा मध्यवर्ग की प्रगतिशील नारी है जो पति के अत्याचार का मूल कारण आर्थिक कमी को बताती है। उसका विचार है कि पति की सम्पत्ति व घर पे पत्नी का पूरा अधिकार होता है–"पुष्पा ने आवेश के साथ कहा–हम भी तो वही आत्मबल, शक्ति और कला प्राप्त करना चाहती हैं लेकिन तुम लोगों के मारे जब कुछ चलने पाए। मर्यादा और आदर्श और जाने कि किन बहानों से हमें दबाने की और हमारे ऊपर हुकूमत जमाए रखने की कोशिश करते रहते हो।"[48] अतः पुष्पा का यह कथन आज की प्रगतिशील नारी का प्रतिनिधित्व करता है जो आत्मनिर्भर बन कर रहना चाहती है, पुरुष के अत्याचार सहकर उस पर निर्भर होकर नहीं। यह एक मध्यवर्गीय नारी की सोच है जो स्वयं में बहुत महत्त्वपूर्ण है जिसे प्रेमचन्द ने 'मंगलसूत्र' में उद्घाटित करने का प्रयास किया है। प्रेमचन्द ने 'मंगलसूत्र' में आर्थिक समस्या को देव कुमार के माध्यम से दिखाया है। उनमें धर्म, आत्मसम्मान, समाज–सेवा व मर्यादाओं के प्रति गहरी आस्था होती है वह देखते हैं कि धर्म, समाज, मर्यादा आदि के प्रति मध्यवर्ग की आस्था टूट रही है। एक स्थान पर दोस्तों के मंसूबे सुनकर देव कुमार को विश्वास नहीं हुआ–"उन्होंने स्वछन्द, निर्भीक, निष्कपट ज़िन्दगी व्यतीत की थी। कलाकारों में एक तरह का जो आत्माभिमान होता है उसने सदैव उनको ढारस (सांत्वना) दिया था, उन्होंने तकलीफें उठाई थीं, फ़ाक़े भी किए थे, अपमान सहे थे लेकिन कभी अपनी आत्मा को कलुषित न किया था।"[49] अतः देवकुमार के इस तथ्य से मध्यवर्गीय समाज की सोच व आत्मसम्मान की भावना हमारे सामने आती है कि तत्कालीन समाज में मर्यादा, आत्मसम्मान, इज़्ज़त

व अपने स्वाभिमान को लेकर एक मध्यवर्गीय व्यक्ति क्या सोचता है, जो देवकुमार के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत है। आगे एक स्थान पर देवकुमार के माध्यम से सामाजिक मर्यादाओं के सम्बन्ध में लेखक स्वयं कहता है कि–"समाज अपनी मर्यादाओं पर टिका हुआ है। उन मर्यादाओं को तोड़ दो और समाज का अन्त हो जायेगा।"[50] अतः वर्ग चाहे कोई भी हो सभी के लिए सामाजिक मर्यादा एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है साथ ही 'मंगलसूत्र' में मध्यवर्ग की राजनीतिक चेतना के जगह–जगह वर्णन देखने को मिलते हैं। 'मंगलसूत्र' का मध्यवर्गीय समाज भविष्य व देश को उज्जवल बनाने के लिए संघर्ष को महत्त्वपूर्ण बताता है। इस प्रकार 'मंगलसूत्र' में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व आर्थिक समस्याओं का चित्रण विस्तार से मिलता है। 'मंगलसूत्र' में देवकुमार मध्यवर्ग के आदर्शवादी पात्र है जो आर्थिक व्यवस्था से सन्तुष्ट नहीं हैं तथा मानते हैं कि असमान धन के वितरण के कारण ही समाज में अमीरी व ग़रीबी का भेद होता है–"इन दिनों वह यही पहेली सोचते रहते थे कि संसार की कुव्यवस्था क्यों है? कर्म और संस्कार का आश्रय लेकर वह कहीं न पहुँच पाते थे। सर्वात्मवाद से भी उनकी गुत्थी न सुलझती थी। अगर सारा विश्व एकात्म है तो फिर यह भेद क्यों है? क्यों एक आदमी ज़िन्दगी भर कड़ी मेहनत करके भी भूखों मरता है, और दूसरा आदमी हाथ–पांव न हिलाने पर भी फूलों की सेज पर सोता है। यह सर्वात्म है या घोर अनात्म।"[51] इस प्रकार देवकुमार अन्नाय के प्रति क्षुब्द होते हैं वह सोचते हैं कि एक ही ईश्वर के बनाए लोगों में इतनी असमानता क्यों है? इस विषय पर देवकुमार के माध्यम से लेखक स्वयं कहता है–"न्याय, कहाँ है? एक ग़रीब आदमी किसी खेत से बाले नोच कर खा लेता है, कानून उसे सज़ा देता है। दूसरा आदमी दिनदहाड़े दूसरों को लूटता है और उसे पदवी मिलती है सम्मान मिलता है। कुछ आदमी तरह–तरह के हथियार

बाँध कर आते हैं और निरीह दुर्बल मज़दूरों पर आतंक जमाकर अपना गुलाम बना लेते हैं। लगान और टैक्स, महसूल और कितने ही नामों से उसे लूटना शुरू करते हैं और आप लम्बा–लम्बा वेतन उड़ाते हैं, शिकार खेलते हैं, नाचते हैं, रंगरेलियाँ मनाते हैं, यही है ईश्वर का रचा हुआ संसार, यही न्याय है?"[52] इस प्रकार प्रेमचन्द ने 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण) लगभग अपने सभी उपन्यासों में अन्याय, धन के असमान वितरण व अन्य सामाजिक दोष दिखाए हैं और मध्यवर्ग सदैव इस सामाजिक दोष का आलोचक रहा है यह भी दिखाने का प्रयास किया है। अतः स्पष्ट है कि 'मंगलसूत्र' में वर्णित मध्यवर्ग की समस्याओं को देवकुमार पात्र के माध्यम से प्रेमचन्द ने स्वयं अपने मध्यवर्गीय जीवन के हर उतार–चढ़ाव व परिस्थितियों को प्रस्तुत किया है।

अमृतराय ने अपनी पुस्तक 'कलम का सिपाही' में प्रेमचन्द की मृत्यु के पहले की घटनाओं के विषय में लिखा है–"मुंशी जी अपनी उस तकलीफ में भी बिस्तर छोड़कर नीचे फर्श पर आ बैठते हैं और 'मंगलसूत्र' उठा लेते हैं जिसके नायक देवकुमार वह खुद हैं। एक नामी–ग्रामी सच्चे, ईमानदार, स्वाभिमानी और ग़रीब लेखक।"[53] अतः प्रेमचन्द का सम्बन्ध एक मध्यवर्गीय परिवार से था वह मध्यवर्ग के लेखक थे। उन्होंने अपने अन्तिम व अपूर्ण उपन्यास 'मंगलसूत्र' में मध्यवर्गीय समाज के हर पहलुओं अर्थात् एक ओर मध्यवर्ग की आदर्शवादिता, ईमानदारी, सच्चाई व राष्ट्रीय भावना को दिखाया तो दूसरी ओर इसी वर्ग की स्वार्थी मनोवृत्ति, धूर्तता, झूठी प्रदर्शनप्रियता व दिखावे के जीवन आदि दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों को अंकित किया है।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों व सन्दर्भों द्वारा स्पष्ट है कि प्रेमचन्द अपने किसी भी उपन्यास में मध्यवर्ग को नहीं भूले हैं। प्रेमचन्द ने 'प्रतिज्ञा' से लेकर 'मंगलसूत्र'

(अपूर्ण) तक सभी उपन्यासों में मध्यवर्गीय समस्याओं को उद्घाटित किया है। मध्यवर्ग की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक कोई भी समस्या उनसे छूटी नहीं है। उनकी स्वाभाविक सहानुभूति मध्यवर्ग के प्रति रही है उन्होंने अपने उपन्यासों में जहाँ एक ओर मध्यवर्ग की कमियों, दुर्बलताओं व कमज़ोरियों को दिखाया वहीं दूसरी ओर मध्यवर्ग की राष्ट्रवादी, आदर्शवादी व सुधारवादी भावनाओं का भी चित्रण यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास साहित्य के द्वारा तत्कालीन समाज में उभरने वाले मध्यवर्ग के नैतिक मूल्यों व आदर्शों को प्रतिष्ठित किया है चूँकि प्रेमचन्द को नैतिक मूल्यों पर गहन विश्वास व आस्था थी इसलिए उन्होंने कहीं भी नैतिक मूल्यों का पतन नहीं दिखाया है। सदैव अच्छे कर्म और मानवतावाद की बात कही। उन्होंने मध्यवर्ग को सदा अपने दृष्टिपथ में रखा है और अपनी सूक्ष्म दृष्टि द्वारा मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं का अध्ययन व विवेचन किया है। मध्यवर्गीय जीवन की छोटी–से–छोटी समस्या उनकी आंखों से ओझल नहीं हो सकी। प्रेमचन्द मध्यवर्ग की कमज़ोरियों, शक्तियों व सीमाओं से भली–भाँति परिचित थे इसलिए वे सदैव इस वर्ग के प्रति सचेत व जागरुक रहे क्योंकि उनका मानना था कि समाज को एक नया मोड़ देने, नयी दृष्टि दिखाने वाला, आस्थाओं और मान्यताओं को विश्वास में ढालने वाला एक ही वर्ग होता है, और वह है मध्यवर्ग। प्रेमचन्द का उपन्यास साहित्य उनके युग की आवाज़ है। उनका युग मध्यवर्ग के विकास का युग था। यही कारण है कि उनके उपन्यास साहित्य में उभरता हुआ प्रगतिशील मध्यवर्ग नैतिक मूल्यों, सामाजिक मान्यताओं व आदर्शों को स्थापित करने में सफ़ल हुआ है।

सन्दर्भ :–

1. प्रेमचन्द, शिवरानी देवी, प्रेमचन्दः घर में, 1956, आत्माराम एन्ड संस प्रकाशक, कश्मीरी गेट, दिल्ली–6, पृष्ठ 10
2. मदान, डॉ0 इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन, 1963, राजकमल पब्लिकेशन लि0, दिल्ली, पृष्ठ 37
3. वही, पृष्ठ, (आमुख)
4. सिंह, डॉ0 मंजुलता, हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, 1971, आर्यबुक डिपो, करौलबाग, दिल्ली, पृष्ठ 83
5. वही, पृष्ठ 83
6. मदान, डॉ0 इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन, 1963, (आमुख) राजकमल पब्लिकेशन लि0, दिल्ली, पृष्ठ 5
7. सिंह, डॉ0 मंजुलता, हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, 1971, आर्यबुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली, पृष्ठ 84
8. मदान, डॉ0 इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन, 1963, राजकमल पब्लिकेशन लि0, दिल्ली, पृष्ठ 49
9. प्रेमचन्द, प्रतिज्ञा, 2006, विश्वबुक्स, बदरपुर, नई दिल्ली, पृष्ठ 19
10. वही, पृष्ठ 79
11. वही, पृष्ठ 79
12. भटनागर, डॉ0 महेन्द्र, समस्या मूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द, द्वितीय सं0 1961, हिन्दी प्रचारक प्रकाशन वाराणसी, पृष्ठ 33
13. प्रेमचन्द, सेवासदन, 2005, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ 7

14. वही, पृष्ठ 6

15. वही, पृष्ठ 34

16. मदान, डॉ0 इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन, 1963, राजकमल पब्लिकेशन लि0, दिल्ली, पृष्ठ 63

17. धवन, डॉ0 सुषमा, हिन्दी उपन्यास, 1972, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 29

18. प्रेमचन्द, प्रेमाश्रम, साहित्य ज्ञान माला, पृष्ठ 16

19. वही, पृष्ठ 17

20. प्रेमचन्द, वरदान 1999, मनोज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ 6

21. वही, पृ0 99

22. मदान, डॉ0 इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन, 1963, राजकमल पब्लिकेशन लि0, दिल्ली, पृष्ठ 46

23. सिंह, डॉ0 मंजुलता, हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, 1971, आर्यबुक डिपो, करौलबाग, दिल्ली, पृष्ठ 93

24. प्रेमचन्द, निर्मला, एवरग्रीन पब्लिकेशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ 10

25. वही, पृष्ठ 32

26. भटनागर, डॉ0 महेन्द्र, समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द, द्वितीय सं0 1961, हिन्दी प्रचारक प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 34

27. प्रेमचन्द, रंगभूमि, रजत प्रकाशन, देहलीगेट, मेरठ–2, पृष्ठ 9

28. वही, पृष्ठ 195

29. वही, पृष्ठ 305

30. सिंह, डॉ0 मंजुलता, हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, 1971, आर्यबुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली, पृष्ठ 99

31. धवन, डॉ0 सुषमा, हिन्दी उपन्यास, 1972, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 25

32. प्रेमचन्द, कायाकल्प, रजत प्रकाशन, देहली गेट, मेरठ–2, पृष्ठ 162

33. वही, पृष्ठ 136–137

34. भटनागर, डॉ0 महेन्द्र, समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द, द्वितीय सं0 1961, हिन्दी प्रचारक प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 34

35. मदान, डॉ0 इन्द्रनाथ, प्रेमचन्द : एक विवेचन, 1963, राजकमल पब्लिकेशन लि0, दिल्ली, पृष्ठ 56

36. प्रेमचन्द, ग़बन, मनोज बुक्स, मेन रोड, बुराड़ी, नई दिल्ली, पृष्ठ 8

37. वही, पृष्ठ 24

38. वही, पृष्ठ 35

39. सिंह, डॉ0 मंजुलता, हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, 1971, आर्यबुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली, पृष्ठ 106

40. वही, पृष्ठ 107

41. प्रेमचन्द, कर्मभूमि, मनोज पब्लिकेशन, चांदनी चौक, दिल्ली, पृष्ठ 280

42. वही, पृष्ठ 182

43. वही, पृष्ठ 103–104

44. प्रेमचन्द, गोदान, मनोज बुक्स, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली, पृष्ठ 159

45. वही, पृष्ठ 147

46. वही, पृष्ठ 277

47. वही, पृष्ठ 57

48. प्रेमचन्द, प्रतिज्ञा एवं मंगलसूत्र (दो उपन्यास), 2007, विश्वबुक्स, बदरपुर, नई दिल्ली, पृष्ठ 124

49. वही, पृष्ठ 141

50. वही, पृष्ठ 141

51. वही, पृष्ठ 145

52. वही, पृष्ठ 146

53. अमृतराय, कलम का सिपाही, 1962, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 634